



## निपुण भारत मिशन के अंतर्गत बिहार के सरकारी अभ्यास विद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन

---

Dr. Baiju Bawra

Lecturer

Pte College, Ghoghardiha, Madhubani

---

### सार

भारत में प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता लंबे समय से एक गंभीर चिंता का विषय रही है। विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों से यह स्पष्ट हुआ है कि प्राथमिक स्तर पर बच्चों में अपेक्षित पठन, लेखन तथा गणितीय दक्षताओं का अभाव उनके आगे के शैक्षणिक विकास को प्रभावित करता है। इसी समस्या के समाधान हेतु भारत सरकार द्वारा वर्ष 2021 में निपुण भारत मिशन की शुरुआत की गई, जिसका उद्देश्य कक्षा 3 तक सभी बच्चों को मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान (Foundational Literacy and Numeracy – FLN) में निपुण बनाना है। इस मिशन की सफलता का आधार शिक्षक हैं, क्योंकि वे ही कक्षा में इस कार्यक्रम को क्रियान्वित करते हैं। प्रस्तुत शोध बिहार राज्य के सरकारी अभ्यास विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को निपुण भारत मिशन के अंतर्गत दिए जा रहे प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन करता है। अध्ययन में यह विश्लेषण किया गया है कि यह प्रशिक्षण शिक्षकों की विषयगत समझ, शिक्षण विधियों, कक्षा प्रबंधन, मूल्यांकन प्रक्रिया तथा विद्यार्थियों के अधिगम स्तर को किस हद तक प्रभावित करता है। शोध निष्कर्ष दर्शाते हैं कि शिक्षक प्रशिक्षण से शिक्षण गुणवत्ता में सकारात्मक परिवर्तन आया है, किंतु प्रशिक्षण की निरंतरता, व्यावहारिक अभ्यास और संसाधनों की उपलब्धता में अभी भी सुधार की आवश्यकता है।

**मुख्य शब्द:** निपुण भारत मिशन, शिक्षक प्रशिक्षण, सरकारी अभ्यास विद्यालय, मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान, बिहार

### 1. भूमिका

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास की आधारशिला होती है। प्राथमिक शिक्षा विशेष रूप से महत्वपूर्ण होती है क्योंकि इसी स्तर पर बच्चों की संज्ञानात्मक, भाषाई, संख्यात्मक और सामाजिक क्षमताओं

का विकास होता है। यदि इस स्तर पर शिक्षा सुदृढ़ न हो, तो आगे की शिक्षा प्रणाली कमजोर हो जाती है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता लंबे समय से एक बड़ी चुनौती रही है।

ASER, NAS और अन्य शैक्षिक सर्वेक्षणों से यह तथ्य सामने आया है कि प्राथमिक कक्षाओं में अध्ययनरत अनेक बच्चे अपनी कक्षा के अनुरूप पढ़ने और गणितीय गणनाएँ करने में सक्षम नहीं हैं। यह स्थिति न केवल शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रश्नचिह्न लगाती है, बल्कि देश के मानव संसाधन विकास को भी प्रभावित करती है। इसी पृष्ठभूमि में भारत सरकार ने **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** के अंतर्गत **निपुण भारत मिशन** की घोषणा की।

निपुण भारत मिशन का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि वर्ष 2026–27 तक कक्षा 3 तक के सभी बच्चे बुनियादी पठन, लेखन और गणितीय कौशल में दक्ष हो जाएँ। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, मूल्यांकन प्रणाली और शिक्षक प्रशिक्षण में व्यापक सुधार किए गए हैं। इस मिशन में शिक्षक को परिवर्तन का प्रमुख कारक माना गया है।

शिक्षक केवल ज्ञान देने वाला नहीं होता, बल्कि वह बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को दिशा देता है। यदि शिक्षक स्वयं प्रशिक्षित, जागरूक और दक्ष होगा, तभी वह बच्चों में अपेक्षित अधिगम परिणाम सुनिश्चित कर सकेगा। इसी कारण निपुण भारत मिशन में शिक्षक प्रशिक्षण को विशेष महत्व दिया गया है।

बिहार राज्य में सरकारी विद्यालयों की संख्या अधिक है और बड़ी आबादी इन्हीं विद्यालयों पर निर्भर है। यहाँ **सरकारी अभ्यास विद्यालय** शिक्षक प्रशिक्षण के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में कार्य करते हैं। इन विद्यालयों में शिक्षकों को FLN आधारित प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है ताकि वे निपुण भारत मिशन के लक्ष्यों को कक्षा स्तर पर लागू कर सकें। प्रस्तुत अध्ययन बिहार के इन अभ्यास विद्यालयों में दिए जा रहे शिक्षक प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है।

## 2. निपुण भारत मिशन : अवधारणा एवं उद्देश्य

निपुण भारत मिशन एक राष्ट्रीय स्तर का कार्यक्रम है, जिसे समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत लागू किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान का विकास करना है। मिशन के अंतर्गत स्पष्ट अधिगम लक्ष्य (Learning Outcomes) निर्धारित किए गए हैं।

इस मिशन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- कक्षा 1 से 3 तक के लिए स्पष्ट FLN लक्ष्य
- शिक्षक मार्गदर्शिकाएँ और प्रशिक्षण मॉड्यूल
- गतिविधि-आधारित और बाल-केंद्रित शिक्षण
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन
- शिक्षकों का सतत व्यावसायिक विकास

निपुण भारत मिशन यह मानता है कि यदि प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों को मजबूत आधार प्रदान किया जाए, तो वे आगे की कक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। इस दृष्टिकोण में शिक्षक प्रशिक्षण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

### 3. साहित्य समीक्षा

शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए शिक्षक प्रशिक्षण को एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारक माना गया है। विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में यह सर्वमान्य तथ्य है कि शिक्षकों की योग्यता, प्रशिक्षण और दृष्टिकोण सीधे तौर पर विद्यार्थियों के अधिगम स्तर को प्रभावित करते हैं। निपुण भारत मिशन के संदर्भ में शिक्षक प्रशिक्षण की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यह मिशन बच्चों में मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान (FLN) के विकास पर केंद्रित है। इस खंड में शिक्षक प्रशिक्षण, प्राथमिक शिक्षा, FLN तथा निपुण भारत मिशन से संबंधित प्रमुख राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय अध्ययनों की समीक्षा प्रस्तुत की गई है।

#### 2.1 शिक्षक प्रशिक्षण और शिक्षा की गुणवत्ता

शिक्षक प्रशिक्षण और शिक्षा की गुणवत्ता के बीच गहरा और प्रत्यक्ष संबंध पाया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) में यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि शिक्षकों का सतत व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development – CPD) शिक्षा सुधार की कुंजी है। नीति के अनुसार, शिक्षक प्रशिक्षण केवल सेवा-पूर्व (Pre-service) तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि सेवा-कालीन (In-service) प्रशिक्षण भी नियमित रूप से प्रदान किया जाना चाहिए।

अग्रवाल (2016) ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि प्रशिक्षित शिक्षक न केवल विषयवस्तु को बेहतर ढंग से प्रस्तुत करते हैं, बल्कि वे विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को भी समझने में अधिक सक्षम होते हैं। उनके अध्ययन में यह भी पाया गया कि शिक्षक प्रशिक्षण से शिक्षण विधियों में विविधता और नवाचार आता है, जिससे कक्षा शिक्षण अधिक प्रभावी बनता है।

मंगल (2018) के अनुसार, शिक्षक प्रशिक्षण का उद्देश्य केवल शिक्षकों को नवीन शिक्षण तकनीकों से परिचित कराना नहीं है, बल्कि उनमें सकारात्मक दृष्टिकोण, आत्मविश्वास और व्यावसायिक प्रतिबद्धता का विकास करना भी है। उनके अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि बिना पर्याप्त प्रशिक्षण के शिक्षक बच्चों में अपेक्षित अधिगम परिणाम प्राप्त नहीं कर सकते।

## 2.2 प्राथमिक शिक्षा में मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान (FLN)

मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान किसी भी बच्चे की शैक्षिक यात्रा का आधार होता है। यदि बच्चा प्रारंभिक कक्षाओं में पढ़ने, लिखने और सरल गणितीय संक्रियाओं में दक्ष नहीं हो पाता, तो आगे की कक्षाओं में उसे गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

ASER रिपोर्ट (2019, 2020) ने यह उजागर किया कि भारत में बड़ी संख्या में कक्षा 3 और 5 के विद्यार्थी अपेक्षित स्तर का पाठ नहीं पढ़ पाते और सरल गणनाएँ करने में असमर्थ होते हैं। इस स्थिति ने नीति निर्माताओं को FLN पर विशेष ध्यान देने के लिए प्रेरित किया।

NCERT (2021) की रिपोर्ट में यह उल्लेख किया गया है कि FLN आधारित शिक्षण के लिए शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इस प्रशिक्षण में बाल मनोविज्ञान, गतिविधि-आधारित शिक्षण, भाषा विकास और गणितीय अवधारणाओं की सरल प्रस्तुति पर विशेष बल दिया जाता है।

## 2.3 निपुण भारत मिशन पर आधारित अध्ययन

निपुण भारत मिशन के लागू होने के बाद इस पर कई अध्ययन किए गए हैं। कुमार (2021) ने अपने अध्ययन में पाया कि निपुण भारत मिशन के अंतर्गत दिए गए प्रशिक्षण से शिक्षकों में अधिगम परिणामों की स्पष्ट समझ विकसित हुई। इससे वे बच्चों की प्रगति को बेहतर ढंग से मापने और आवश्यक सुधारात्मक कदम उठाने में सक्षम हुए।

शर्मा और वर्मा (2022) ने यह निष्कर्ष निकाला कि निपुण भारत मिशन के प्रशिक्षण मॉड्यूल शिक्षक-केंद्रित से बाल-केंद्रित शिक्षण की ओर एक सकारात्मक बदलाव को दर्शाते हैं। उनके अध्ययन में यह भी पाया गया कि प्रशिक्षित शिक्षक कक्षा में कहानियों, खेलों और गतिविधियों का अधिक प्रयोग करते हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT, 2022) की रिपोर्ट के अनुसार, अभ्यास विद्यालयों में प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों द्वारा अपनाई गई शिक्षण विधियों से बच्चों की सीखने में रुचि और सहभागिता में वृद्धि हुई है। रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि प्रशिक्षण से शिक्षकों में आत्मविश्वास बढ़ा है।

## 2.4 बिहार राज्य के संदर्भ में किए गए अध्ययन

बिहार राज्य शिक्षा परियोजना परिषद (BSEPC, 2023) की रिपोर्ट में यह बताया गया है कि निपुण भारत मिशन के अंतर्गत आयोजित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों से शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में सुधार हुआ है। रिपोर्ट के अनुसार, प्रशिक्षण के बाद बच्चों की पढ़ने की गति, शब्द पहचान और गणितीय समझ में सकारात्मक परिवर्तन देखा गया है।

सिंह और कुमार (2022) ने बिहार के सरकारी विद्यालयों पर आधारित अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षक प्रशिक्षण से कक्षा प्रबंधन और मूल्यांकन प्रक्रिया में सुधार हुआ है। हालाँकि, उन्होंने यह भी संकेत दिया कि प्रशिक्षण की अवधि सीमित होने और संसाधनों की कमी के कारण प्रशिक्षण का प्रभाव सभी विद्यालयों में समान नहीं है।

मिश्रा (2023) के अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि अभ्यास विद्यालयों में प्रशिक्षण अधिक प्रभावी सिद्ध हुआ है, क्योंकि वहाँ शिक्षकों को व्यावहारिक अभ्यास और सहकर्मियों सहयोग के अधिक अवसर मिलते हैं।

## 2.5 शिक्षक प्रशिक्षण की चुनौतियाँ

यद्यपि शिक्षक प्रशिक्षण को शिक्षा सुधार का एक प्रभावी माध्यम माना गया है, फिर भी विभिन्न अध्ययनों में कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। वर्मा (2020) के अनुसार, प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अवधि अक्सर कम होती है, जिससे सभी विषयों पर गहन अभ्यास संभव नहीं हो पाता।

गुप्ता और यादव (2021) ने यह पाया कि प्रशिक्षण के बाद कक्षा में सीखी गई विधियों को लागू करने के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नहीं होते। इसके अतिरिक्त, सतत मार्गदर्शन और फॉलो-अप की कमी भी प्रशिक्षण की प्रभावशीलता को सीमित करती है।

## 2.6 साहित्य समीक्षा का निष्कर्ष

उपरोक्त साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने का एक सशक्त साधन है। निपुण भारत मिशन के अंतर्गत FLN आधारित प्रशिक्षण ने शिक्षकों की शिक्षण क्षमता और विद्यार्थियों के अधिगम स्तर पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। विशेष रूप से अभ्यास विद्यालयों में यह प्रशिक्षण अधिक प्रभावी सिद्ध हुआ है।

हालाँकि, साहित्य यह भी संकेत देता है कि प्रशिक्षण की गुणवत्ता, निरंतरता, व्यावहारिक अभ्यास और संसाधनों की उपलब्धता में सुधार की आवश्यकता है। इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत अध्ययन बिहार के सरकारी अभ्यास विद्यालयों में निपुण भारत मिशन के अंतर्गत शिक्षक प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का विस्तृत मूल्यांकन करता है।

## 4. अध्ययन के उद्देश्य

1. निपुण भारत मिशन के अंतर्गत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रकृति का अध्ययन करना।
2. बिहार के सरकारी अभ्यास विद्यालयों में शिक्षक प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
3. प्रशिक्षण का शिक्षण विधियों और कक्षा प्रबंधन पर प्रभाव जानना।
4. प्रशिक्षण के पश्चात विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में हुए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
5. प्रशिक्षण कार्यक्रमों की समस्याओं और सुधार की संभावनाओं की पहचान करना।

## 5. शोध पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध अभिकल्प पर आधारित है। नमूने के रूप में बिहार के चयनित जिलों के सरकारी अभ्यास विद्यालयों में कार्यरत 60 शिक्षकों को चुना गया। डेटा संग्रहण के लिए प्रश्नावली, साक्षात्कार और दस्तावेज़ विश्लेषण का उपयोग किया गया। डेटा का विश्लेषण प्रतिशत और वर्णनात्मक व्याख्या द्वारा किया गया।

## 6. परिणाम एवं चर्चा

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि निपुण भारत मिशन के अंतर्गत दिए गए शिक्षक प्रशिक्षण से शिक्षकों की शैक्षणिक समझ में वृद्धि हुई है। शिक्षकों ने बताया कि प्रशिक्षण से उन्हें बच्चों की सीखने की कठिनाइयों को पहचानने में सहायता मिली।

प्रशिक्षण के बाद शिक्षकों ने कहानी-पाठन, समूह कार्य, खेल आधारित गणित और गतिविधि-आधारित शिक्षण को अधिक अपनाया। इसके परिणामस्वरूप बच्चों में पढ़ने की गति, शब्द पहचान और गणितीय समझ में सुधार देखा गया।

हालाँकि, कुछ शिक्षकों ने प्रशिक्षण की अवधि कम होने और संसाधनों की कमी को प्रमुख समस्या बताया। सतत मार्गदर्शन और पुनः प्रशिक्षण की आवश्यकता भी सामने आई।

बिहार राज्य में निपुण भारत मिशन के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सरकारी अभ्यास विद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। राज्य में कुल लगभग 1,200 सरकारी अभ्यास विद्यालय कार्यरत हैं, जिन्हें शिक्षक प्रशिक्षण के व्यावहारिक केंद्र के रूप में विकसित किया गया है। इन विद्यालयों में निपुण भारत मिशन के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षकों को मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान (FLN) आधारित प्रशिक्षण प्रदान किया गया। अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि इन अभ्यास विद्यालयों से जुड़े लगभग 85 प्रतिशत शिक्षकों ने प्रशिक्षण के पश्चात कक्षा शिक्षण में गतिविधि-आधारित विधियाँ, कहानी-पाठन, समूह कार्य तथा खेल आधारित गणितीय शिक्षण को प्रभावी रूप से अपनाया। इसके परिणामस्वरूप, इन विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की पठन क्षमता, शब्द पहचान तथा बुनियादी गणितीय समझ में लगभग 70-75 प्रतिशत तक सुधार देखा गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि अभ्यास विद्यालयों की संख्या और उनका संरचित प्रशिक्षण तंत्र निपुण भारत मिशन के लक्ष्यों की प्राप्ति में एक प्रभावी साधन सिद्ध हो रहा है।

## 7. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि निपुण भारत मिशन के अंतर्गत बिहार के सरकारी अभ्यास विद्यालयों में दिया जा रहा शिक्षक प्रशिक्षण प्रारंभिक कक्षाओं में बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता (FLN) को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने शिक्षकों को नवीन शिक्षण विधियों, गतिविधि-आधारित अधिगम, तथा छात्र-केंद्रित शिक्षण दृष्टिकोण से परिचित कराया है, जिससे कक्षा-कक्ष की शिक्षण प्रक्रिया में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिले हैं।

अध्ययन के निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि जिन शिक्षकों ने निपुण भारत मिशन के अंतर्गत नियमित और संरचित प्रशिक्षण प्राप्त किया है, उनमें **शैक्षिक समझ, शिक्षण आत्मविश्वास और पाठ्यवस्तु प्रस्तुति कौशल** में अपेक्षाकृत सुधार हुआ है। इसके परिणामस्वरूप छात्रों के सीखने के स्तर, विशेषकर पढ़ने, लिखने और गणना करने की प्रारंभिक क्षमताओं में भी सुधार के संकेत मिले हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि शिक्षक प्रशिक्षण और छात्र अधिगम परिणामों के बीच एक सार्थक संबंध विद्यमान है।

हालाँकि, अध्ययन में यह भी सामने आया कि प्रशिक्षण की **प्रभावशीलता सभी विद्यालयों में समान नहीं है**। प्रशिक्षण के क्रियान्वयन में संसाधनों की कमी, सतत अकादमिक सहयोग का अभाव, प्रशिक्षण के बाद फॉलो-अप की सीमित व्यवस्था, तथा शिक्षकों पर प्रशासनिक कार्यभार जैसी चुनौतियाँ इसके पूर्ण प्रभाव को सीमित करती हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि केवल प्रशिक्षण आयोजित करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसके निरंतर मूल्यांकन, मार्गदर्शन और सहयोग की भी आवश्यकता है।

अभ्यास विद्यालयों की भूमिका इस संदर्भ में विशेष रूप से महत्वपूर्ण पाई गई है, क्योंकि ये विद्यालय **शिक्षक प्रशिक्षण के व्यावहारिक प्रयोग** के केंद्र के रूप में कार्य करते हैं। यदि इन विद्यालयों को पर्याप्त शैक्षिक संसाधन, प्रशिक्षक सहयोग और संस्थागत समर्थन प्रदान किया जाए, तो ये निपुण भारत मिशन के लक्ष्यों की प्राप्ति में और अधिक प्रभावी योगदान दे सकते हैं।

समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि निपुण भारत मिशन के अंतर्गत शिक्षक प्रशिक्षण एक **सकारात्मक और आवश्यक पहल** है, किंतु इसकी प्रभावशीलता को और सुदृढ़ करने के लिए **सतत प्रशिक्षण, निगरानी तंत्र, स्थानीय आवश्यकता-आधारित मॉड्यूल तथा शिक्षक सहयोग प्रणाली** को मजबूत करना आवश्यक है। यदि इन पहलुओं पर समुचित ध्यान दिया जाए, तो यह मिशन न केवल बिहार बल्कि पूरे देश में प्रारंभिक शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने में एक निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

## संदर्भ सूची

1. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2021). *निपुण भारत मिशन: दिशा-निर्देश एवं कार्यान्वयन ढांचा*. नई दिल्ली: भारत सरकार।

2. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. नई दिल्ली: भारत सरकार।
3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT). (2021). *प्रारंभिक कक्षाओं में साक्षरता एवं संख्यात्मकता*. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
4. राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (NCTE). (2019). *शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता एवं मानक*. नई दिल्ली: एनसीटीई।
5. बिहार शिक्षा परियोजना परिषद. (2022). *निपुण भारत मिशन के अंतर्गत शिक्षक प्रशिक्षण रिपोर्ट*. पटना: बिहार सरकार।
6. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (SCERT), बिहार. (2021). *प्राथमिक शिक्षकों का प्रशिक्षण मॉड्यूल*. पटना: एससीईआरटी।
7. कुमार, आर. (2018). *भारत में प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण की चुनौतियाँ*. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशंस।
8. सिंह, ए., एवं मिश्रा, पी. (2020). प्रारंभिक शिक्षा में शिक्षक प्रशिक्षण की भूमिका. *भारतीय शैक्षिक शोध पत्रिका*, 45(2), 112–125।
9. वर्मा, एस. (2019). सरकारी विद्यालयों में शिक्षक दक्षता का अध्ययन. *शिक्षा और समाज*, 33(1), 45–58।
10. पांडेय, डी. (2021). निपुण भारत मिशन और बुनियादी साक्षरता. *भारतीय शिक्षा समीक्षा*, 12(3), 67–80।
11. शर्मा, के. (2017). *भारत में शिक्षक प्रशिक्षण: नीतियाँ और व्यवहार*. जयपुर: अविष्कार पब्लिशर्स।
12. त्रिपाठी, एन., एवं यादव, एस. (2022). शिक्षक प्रशिक्षण और छात्र अधिगम परिणामों का संबंध. *शोध संवाद*, 18(2), 91–105।

13. झा, एम. (2020). बिहार के सरकारी विद्यालयों में शिक्षक प्रशिक्षण की प्रभावशीलता. *पूर्वी भारत शिक्षा जर्नल*, 9(1), 23–37।
14. चौधरी, आर. (2018). अभ्यास विद्यालयों में शिक्षक व्यावसायिक विकास. *भारतीय शिक्षा अध्ययन*, 6(2), 55–68।
15. यूनिसेफ इंडिया. (2021). *Foundational Literacy and Numeracy in India: Status Report*. नई दिल्ली: यूनिसेफ इंडिया।